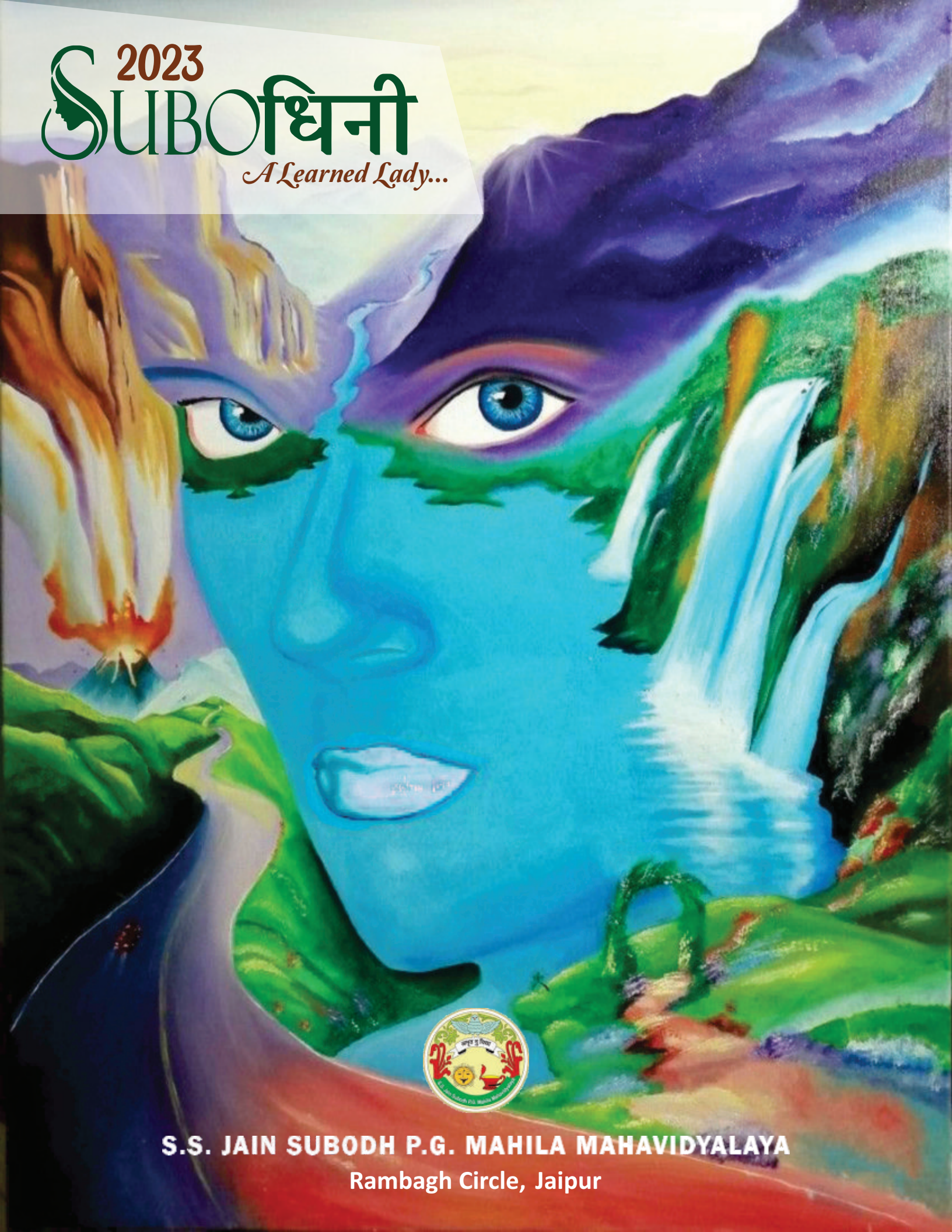


2023
SUBODHINI
A Learned Lady...



S.S. JAIN SUBODH P.G. MAHILA MAHAVIDYALAYA

Rambagh Circle, Jaipur

About the College

From comprehending complex sciences to grasping logic, from understanding life through the prism of experiences to expressing their minds through the arts, S. S. Jain Subodh P.G. Mahila Mahavidyalaya challenges students to think critically and develop intellectual skills.

SSJSPGMM was established under the aegis of S.S. Jain Subodh Shiksha Samiti to provide students to have close interaction with prize-winning and path-breaking faculty and a comprehensive advising committee. The college also caters to the surroundings where individuals are able to interact with their peers in a deep, meaningful way both inside and outside of the classroom.

The institute nurtures creativity, new skills and competencies to ensure the overall development of these qualities. It also strives to optimize the intellectual potential of the girls. Keeping in view the individual interests, the team of highly qualified and devoted faculty members and adequate resources and facilities empower the student's learning.

The college initiates and brings forth various skill development programmes, co-curricular and extra-curricular activities, intra and intercollege competitions, camps, expert talks, and workshops to extend awareness among the students and to let them experience participation in the various facets of life. SSJSPGMM's culture is compatible and the administration system is very scientific. It is among the best educational groups in Rajasthan.



It is doing your Best

IGNITED INGENIOUS

The Governing Council

PRESIDENT

Shri Navratan Kothari

VICE PRESIDENT

Shri R.C. Jain

HONY. SECRETARY

Shri Sumer Singh Bothra

JOINT SECRETARY

Shri Vinod Lodha

MEMBERS

Shri J.K. Ranka (Retd. Judge Rajasthan High Court)

Shri Anil Kumar Gokhroo

Shri Alok Kumar Bumb

Dr. Rakesh Hirawat

Shri Sanjeev Kothari

Shri Vinay Chand Daga

Shri Rajendra Kumar Jain

Shri Jitendra Patwa

Smt. Madhu Modi

Smt. Veena Jamad

Shri Pramod Darda

The College Management Committee

CONVENER

Shri Vinay Chand Daga

MEMBERS

Shri Navratan Kothari

Shri R. C. Jain

Shri S. S. Bothra

Shri Vinod Lodha

Dr. Tara Daga

Dr. Paras Mani Khincha

Dr. Abha Bhatnagar

Dr. Rekha Gupta

Dr. V.K. Gupta

Prof. C.S. Bhandari

Sh. Pramod Darda

Sh. Pradeep Bhandari

Dr. Abhay Upadhyay

Ms. Kajol Punglia

PRINCIPAL

Prof. (Dr.) Renu Joshi

GUARDIAN REPRESENTATIVE

Sh. Naresh Kumar Mulchandani

UNIVERSITY OF RAJASTHAN NOMINEE

Prof. K. G. Sharma

GOVT. NOMINEE

Joint Director Representative,
College Education

STAFF REPRESENTATIVE

Dr. Ruchika Sharma



मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2023
जयपुर, 23 फरवरी, 2023



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय, रामबाग सर्किल, जयपुर की वार्षिक पत्रिका "सुबोधिनी" का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी के साथ नारी सशक्तिकरण के लिए समर्पित ऐसी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। यह शुभ है कि पत्रिका में छात्राओं के महत्वपूर्ण सृजन को रेखांकित किया गया है। इससे संस्थान परिवार की प्रतिभाओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकाशमान करने का मार्ग प्रशस्त होता है। मैं महाविद्यालय परिवार को "सुबोधिनी" पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

To,

प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी, प्राचार्या,

एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय,

रामबाग सर्किल, जयपुर (राज.)-302015

प्रताप सिंह खाचरियावास

मंत्री

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता
मामले विभाग, राजस्थान सरकार



कमरा नं. 2119, मुख्य भवन,
शासन सचिवालय, जयपुर-302005
दूरभाष: 0141-2227362 (कार्यालय)

E-mail: minfoodrajasthan@gmail.com

अ.शा. पत्र क्रमांक: 8805
जयपुर, दिनांक: 22-02-23




संदेश

सुबोध महिला महाविद्यालय द्वारा सुबोधिनी प्रकाशित हो रही है। निश्चित ही यह पत्रिका विशिष्ट सामग्री से ओत-प्रोत होगी। साहित्य समाज का दर्पण होता है।

संस्कृति व सदाचार की सुरक्षा के लिए सुबोधिनी का प्रकाशन विधार्थियों को सन्मार्ग के लिए प्रेरित करें। नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता को विकास अधूरा है। समाज में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, स्वतंत्रता से बोलने का अधिकारी, देश की सुरक्षा एवं आर्थिक व्यवस्था में योगदान, पुरुषों के बराबर दर्जा आदि स्तरों पर नारी को सशक्त एवं उत्तम बना देगा, ये सिद्धांत सार्वभौमिक है, जो जीवन जीने की कला सिखाते है।

इन्हीं निर्मल भावनाओं के साथ आपको व आपकी समस्त कार्यकारिणी, संपादक मंडल को मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।


(प्रतापसिंह खाचरियावास)



प्रो. राजीव जैन
Prof. Rajeev Jain

कुलपति
Vice-Chancellor

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
University of Rajasthan, Jaipur


फरवरी 28, 2023



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि एस.एस. जैन सुबोध स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, जयपुर द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "सुबोधिनी" का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय की वर्ष भर की गतिविधियों, उपलब्धियों, छात्राओं की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों, शिक्षकों की अनुभूतियों से परिपूर्ण यह पत्रिका सभी छात्राओं के लिए प्रेरणा-स्रोत होगी।

मैं इसके सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।


(राजीव जैन)

तेजस्वनी गौतम

भा.पु.से.

जिला पुलिस अधीक्षक

बीकानेर (राज.)

दूरभाष : 0151-2226111 (कार्या.)

: 0151-2226112 (निवास)

फैक्स : 0151-2204213



TEJASWANI GAUTAM

I.P.S.

Superintendent of Police

Bikaner (Rajasthan)

Tel.: (Off.) 0151-2226111

(Res.) 0151-2226112

(Fax) 01512204213

E-mail : sp-bik-rj@nic.in

क्रमांक :

दिनांक:



प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका "सुबोधिनी" के प्रकाशन के लिये बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। नारी सशक्तिकरण से ही मानवता का विकास संभव है। समाज को महिलाओं के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा एवं उन्हें सशक्त बनने के अवसर प्रदान करने होंगे। समाज में ही नहीं बल्कि परिवार के भीतर भी महिलाओं और पुरुषों के बीच भेद-भाव को रोकना होगा। महिलाओं को स्वयं से जुड़े फैसले लेने के लिये स्वतंत्र होना होगा तभी नारी सशक्तिकरण सार्थक होगा।

निःसन्देह यह पत्रिका शिक्षकों एवं छात्राओं के प्रति एक सशक्त मंच है जहां उनकी रचनाओं को स्थान मिलेगा। इस पत्रिका के सृजन से छात्राओं का मनोबल तो बढेगा ही साथ ही उनके योगदान, उनके लेखन कौशल एवं अभिव्यक्ति कौशल को अनवरत वृद्धि और प्रोत्साहन मिलेगा।

आपका यह प्रयास प्रशंसनीय है। कामना करती हूं कि जानकारी से परिपूर्ण यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो। आप आगे भी इसी तरह की पत्रिका का प्रकाशन करते रहें।

शुभकामनाओं सहित...

शुभाकांक्षी

तेजस्वनी गौतम
(तेजस्वनी गौतम)

To,

प्राचार्या एवं प्रकाशन मण्डल सुबोधिनी,

एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय,

रामबाग सर्किल, जयपुर (राज.)



एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय का लक्ष्य यही है कि शिक्षा के माध्यम से छात्राएँ ज्यादा नित नवीन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। महाविद्यालय प्रत्येक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त करने में सफल रहा है। हर्ष का विषय यह है कि समिति ने 1999 में महिला महाविद्यालय की स्थापना की तब से लेकर और आज तक महाविद्यालय की अनेक छात्राएँ राजस्थान विश्वविद्यालय की वरीयता सूची में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करवा चुकी है। महिला महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सुबोधिनी 2022-23' का प्रकाशन किया जा रहा है। नारी सशक्तिकरण के लिए समर्पित यह पत्रिका शिक्षकों एवं छात्राओं का एक ऐसा सशक्त मंच है जहाँ उनकी विविध मौलिक रचनाओं को स्थान दिया जाता है।

जीवन में हर अनुभूति और स्थिति मूल्यवान होती है उनमें से किन्ही अनुभूतियों को शब्द मिल जाते हैं और वही शब्द काव्य और लेखन में अपना स्थान बना लेते हैं। सुबोधिनी उन्ही सुन्दर और विराट शब्दों की एक तेजस्वी रोशनी है जिसमें शिक्षकों एवं छात्राओं की प्रतिभा उभरकर सामने आई है।

आस्था के पुलों को जोड़ना है,
नव स्वप्नों के पंख लगाकर,
उड़ना है।
एक छोटी सी कलम से
समाज को, राष्ट्र को
बदलना है।

शुभकामनाओं सहित

वी.सी. डागा
संयोजक, महाविद्यालय
प्रबंध समिति



S.S. Jain Subodh P.G. Mahila Mahavidyalaya, since its inception has been rendering valuable services for the advancement of society through women empowerment. It brims me with contentment to unleash the crisp periodical 'Subodhini 2023'. This magazine attempts to unfurl the academic and literary fragrance concealed in the intellects of the flowering students, skilled in vivid realms. It is a fertile ground that nurtures the cluster of flamboyant art and brainpower. It comprises a bundle of artistic ingenuity displayed by our students and faculty members. Articles, poetries and artworks exhibited here are exceptional.

The magazine inculcates young minds and imbibes in them the habits of thinking and writing by providing a platform to present their creativity, productive and innovative ideas and thoughts pertaining to every walk of life.

I urge that all the readers would immerse in this ocean of art and would discern the exuberance.

I express my appreciation to the team for their untiring efforts to make this magazine possible and for working assiduously on this project.

Prof. (Dr.) Renu Joshi

Principal
SSJSPGMM

कुछ सार्थक करें

जीवन की सुंदर बगिया में सद्भाव के वृक्ष लगाए जो मानवीय मनोभूमि पर फले-फूले यह जरूरी नहीं कि हम बहुत महान कार्य करें वरन् जरूरी यह है कि हम जो कुछ भी करें वो सार्थक हो। अपने कर्म पथ पर अविचल, अटल रहकर मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहें। ताकि हम छोटे-छोटे लक्ष्यों को सहेजकर आगे बढ़ते रहे। यदि हम किसी की सहायता कर सकते हैं तो अवश्य करें। यदि आप शिक्षा जगत से जुड़े हैं तो गरीब बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी लें, जो किताबें आपके काम नहीं आ रही हैं तो उनको पुस्तकालय में दान करें, जो वस्त्र आपके लिए उपयोगी नहीं हैं उन्हें किसी और को दें। किसी की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करें।

जीवन के प्रति सकारात्मक रहे और यह चिन्तन करें कि लाखों जन्मों के उपरान्त यह जीवन जो आपको मिला है वो कितना अनमोल है और वो मात्र आपको समाज व राष्ट्र की सेवा करने के लिए मिला है अतः अपनी अच्छाईयों को साथ लेकर चलते रहे। दुःख और सुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, दुःख और विषमताओं को त्यागकर एक विराट् सुख की ओर कदम बढ़ाए तभी मानव जीवन सार्थक होगा।

डॉ. इन्दु शर्मा
उप-प्राचार्य

From the Editor's Desk

It is a matter of great pleasure to present the new edition of our College Magazine, 'Subodhini'. Since the inaugural issue, it attempts to provide a creative platform to the students, faculty, and staff members, where their wings of imagination take a new flight. This year too, the pages unfurl the creativity of these young, talented minds with freshness.

My heartfelt gratitude to all the dignitaries who have shown interest in the magazine and contributed with their writings, under the column August Artistry.

Each day, life unfolds its different shades and a person finds himself/herself at a crossroad. In this situation, values become the guiding force and support as a roadmap to sail across the life journey. Some of these values include honesty, dedication, courtesy, patience, respect, love, and care. Amalgamation and accumulation of these values build strong character and healthier self-esteem. A person who aligns his/her goals with the core values leads a purposeful life as it brings out creativity and positivity. Thus, values are the principles that signify the real spirit of the character and give the right direction to life. So, "Values are like lighthouses, they are signals giving us directions, meaning and purpose".

Dr. Smriti Pareek
Editor, Subodhini
Assistant Professor
Department of English

सम्पादकीय

सुबोधिनी 2022-23 सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय का एक सुन्दर प्रतिबिंब है विगत वर्षों का और वर्तमान वर्ष का उल्लास है। सकारात्मकता का, सफलताओं का एक ऐसा आईना है जिसके अन्तर्गत गुरु शिष्य परंपरा के प्रतिमान दृष्टिगोचर होते हैं दोनो ने समान स्तर पर अभिव्यक्ति को नवीन आयाम दिए हैं जो पत्रिका की शोभा को और ज्यादा बढ़ा देते हैं।



कई जीत बाकी है कई शिखर बाकी है,
अभी तो जीवन का सार बाकी है,
यहाँ से चले है नयी मंजिल के लिए
यह तो एक पृष्ठ है पूरी किताब बाकी है।

डॉ. अपर्णा शर्मा
संपादक सुबोधिनी,
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

AUGUST ARTISTRY

The Sigh



Listen more to things
Than to words that are said.
The water's voice sings
And the flame cries
And the wind that brings
The woods to sighs
Is the breathing of the dead.

Those who are dead have never gone away.
They are in the shadows darkening around,
They are in the shadows fading into day,
The dead are not under the ground.
They are in the trees that quiver,
They are in the woods that weep,
They are in the waters of the rivers,
They are in the waters that sleep.
They are in the crowds, they are in the homestead.
The dead are never dead.

Listen more to things
Than to words that are said.
The water's voice sings
And the flame cries
And the wind that brings
The woods to sighs
Is the breathing of the dead
Who have not gone away
Who are not under the ground
Who are never dead.

Those who are dead have never gone away.
They are at the breast of the wife.
They are in the child's cry of dismay
And the fire brand bursting into life.
The dead are not under the ground.
They are in the fire that burns low
They are in the grass with tears to shed,
In the rock where whining winds blow
They are in the forest, they are in the homestead.
The dead are never dead.

Listen more to things
Than to words that are said.
The water's voice sings
And the flame cries
And the wind that brings
The woods to sighs
Is the breathing of the dead.

And repeats each day
The Covenant where it is said
That our fate is bound to the law,
And the fate of the dead who are not dead
To the spirits of breath who are stronger than they.
We are bound to Life by this harsh law
And by this Covenant we are bound
To the deeds of the breathings that die
Along the bed and the banks of the river,
To the deeds of the breaths that quiver
In the rock that whines and the grasses that cry
To the deeds of the breathings that lie
In the shadow that lightens and grows deep
In the tree that shudders, in the woods that weep,
In the waters that flow and the waters that sleep,
To the spirits of breath who are stronger than they
That have taken the breath of the deathless dead
Of the dead who have never gone away
Of the dead who are not now under the ground.

Listen more to things
Than to words that are said.
The water's voice sings
And the flame cries
And the wind that brings
The woods to sighs
Is the breathing of the dead.

Prof. Deepa S.P. Mathur

HOD, Department of English,
& Director, Central Library
U.O.R. Jaipur

बना खुद को ऐसा कि जग ये कहे,
जो तू मिलता रहे चेहरा खिलता रहे।
कहने को कुछ ऐसे कुछ वैसे हैं लोग,
जब तेरी बात हो सजदा मिलता रहे।

तेरा होना कहीं पे मीठा एहसास हो,
तेरी बातों का एक खास अंदाज हो,
तू पुकारे किसी को वो तेरे साथ हो,
हर दिल से यही आस उठती रहे,
बस तू आता रहे मन लुभाता रहे।

बना खुद को ऐसा कि जग ये कहे,
जो तू मिलता रहे चेहरा खिलता रहे॥

चेहरा खिलता रहे



डॉ. अमित शर्मा रूनेही
असिस्टेंट प्रोफेसर (रसायनशास्त्र)
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

विलंबा

ढेर लगे हैं शब्दों के,
विशेषणों की मरमार है,
लंबे अंग्रेजी शब्द,
पर अर्थ की जड़े शुष्क है,
पेड़ पठार पर उगाया है,
पानी नहीं पहुंचता,
और न ही खाद,

उर्वर मूमि बहुत नीचे रह गयी है,
ऊपर से बंजर दिखाई पड़ती है,
तेज आंधी झेलने का मम था पेड़ को,
दमम मी,
एक दिन बवंडर आया,
झटके से उखाड़ कर बड़ी शाखा को,
पटक दिया,
वहीं, नीचे जहाँ पानी है,
और अर्थ मी,
आजकल पेड़ नीचे ही ताकता रहता है।



डॉ. अरुण सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (अंग्रेजी)
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Read Between the Lines to Be a Successful Communicator

A child manages to internalize the linguistic system of her/his father/mother in about six years, but philosophers, linguistics, and psychologists have not been able to externalize it even in two thousand years! The same child who internalizes the linguistic system of her/his father/mother in about six years remains unable to gain competency through the learning system as a student in about sixteen years and under the expert guidance of different teachers/professors, at that! Who can deny 'the child is the father of the man.'



Where lies the difference? Certainly, the lack of attainment exists in not understanding the true feelings behind the utterance/communication, not understanding the utterance/idea as the source intended it when it is merely heard but not listened to. A poor listener cannot be an effective speaker. Listening is first speaking is second. It does not sound true that one is good at writing but poor at speaking as writing skill is the fourth and last one. Speaking attains perfection through practice and drilling.

Listening occupies about 45 percent of the time spent in a communication situation. This is significantly more than speaking, which accounts for 30 percent, and reading and writing, which make up 16 percent and 09 percent respectively. Thus, it is proved that 'we have two ears and one mouth so that we can listen twice as much as we speaks'.

The triangle of communication is made of three arms viz. language, body language, and paralanguage. If one is avoided, certainly communication leads to its failure. Only words and language cannot make any communication successful. One has to read between the lines because the understanding of dialogue involves 55% body language along with facial expressions, 38% tone/volume of voice, and 7% words. Thus, mastery of body language and paralanguage is crucial to communication. 'Words are not crystal, transparent, and unchanged; they are the skin of living thoughts, and may vary greatly in color and content according to the circumstances and time in which they are used.'

The crucial element is meaning, in a communication situation. Meaning cannot be transferred from one person to another, the receiver has to assign meaning to a message in order to understand it. Meaning is in people's minds, not in words. Age, education, cultural background, and many other factors influence the meaning one gives to words. Language does not exist; it happens. To know the language and about language are different things.

Hesitation has its sprout in ignorance. Stage fear is natural and controllable. When competency in the topic/subject concerned and oratory skill prevail hesitation along with ignorance flees away. So, to blame hesitation for lack of spoken skill purely proves a pretext.

The thumb rule of communication is that one should communicate to express, and not to impress, to make understand, and not to confuse. One should not prove to oneself that one talks most about who has the least to say. One should communicate by acknowledging the feelings, needs, and knowledge of the listener otherwise it will resound 'no matter how eloquently a dog may bark, he cannot tell you that his parents were poor and honest.

Dr. Vishnu Kumar Sharma

Assistant Professor
JECRC University, Jaipur

युवा जागो, उठो ! तुम को चलना होगा'



बिजली की तरह फलक पर चमकना होगा
खुद के कैदखाने से तुझको निकलना होगा
खुशबूओं की तरह हर सम्त बिखरना होगा
फूलों की तरह तुझको रोज निखरना होगा
हर मुश्किल से आगे तुझको निकलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

अपने सपनों को थोड़ा जगाओ तो सही
इन उम्मीद के पंखों को फैलाओ तो सही
कभी ऐसी ऊंची उड़ान लगाओ तो सही
हर हद को, उसकी हद बताओ तो सही
आसमानों से आगे तुझको निकलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

यह शाम गम की है पर एक शाम ही तो है
उसके बाद जिन्दगी भर आराम ही तो है
यह जवानी कुछ सपनों का नाम ही तो है
जिंदगी कुछ ख्वाहिशों का पैगाम ही तो है
तेरी हर एक ख्वाहिश को आज मचलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

ऐसे ही मिलती नहीं, कभी किसी को दाद
मर के ही हो पाओगे तुम हर दिल में आबाद
शम्मा का ये सबक तुमको रखना होगा याद
की परवाने से पहले जलो, बूझो उसके बाद
हर शम्मा की तरह तुझको भी पिघलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

पुरानी शाख पर नए पत्ते भी आएंगे जरूर
आज बुरे हैं तो दिन अच्छे भी आएंगे जरूर
चलते हैं तो ठोकरें बच्चे भी खाएंगे जरूर
एक दिन सभी नग्में सच्चे भी गाएंगे जरूर
गिर कर हर बार, हमें खुद ही सँभलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

यह माना कि आज, कोई हमारे साथ नहीं है
लेकिन इतने भी मायूस हमारे हालात नहीं है
बात सिर्फ इतनी सी है और कोई बात नहीं है
कि कभी खत्म ही न हो, ऐसी कोई रात नहीं है
हर एक उदासी, हर निराशा को कुचलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

विदेशों में केसरिया रंग-कालीबंगा को गाड़ दिया
भारतीय सभ्यता और संस्कृति का झंडा गाड़ दिया
अंग्रेजों की छाती चढ़कर, जिसने तिरंगा गाड़ दिया
विवेक जिसने विवेक को मन की गंगा में गाड़ दिया
ऐसे विवेकानंद की तरह युवाओं को ढलना होगा
युवाओं जागो! उठो! तुमको चलना होगा.....

डॉ. संतोष कुमार चारण

सहायक प्रोफेसर

जीव विज्ञान विभाग,

राजस्थान विश्वविद्यालय

जीवन संघर्ष का पर्याय है

(1) जिस किसी भी क्षेत्र में आपकी रूचि है उसमें अपना लक्ष्य निर्धारित करने के बाद तब तक मत रूकिये जब तक कि आपको सफलता प्राप्त नहीं हो जाती। इसे रामचरित्र मानस के एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जब हनुमानजी, सीताजी की खोज में हिंद महासागर पार करके लंका जा रहे थे तो देवताओं ने मैनाउ पर्वत से कहा कि हनुमानजी को थोड़ा विश्राम कराईये। मैनाउ पर्वत ने हनुमानजी से विश्राम करने को

कहा तो हनुमानजी कहते हैं-

'हनुमान तेंहि परसा कर पुःन कीन्ही प्रणाम
राम काज करहुँ बिनु मोहे कहाँ विश्राम।''

अर्थात - जब तक राम का काम पूरा नहीं हो जाता है मैं तब तक विश्राम नहीं करूंगा।

यही स्वभाव हमें भी अपनाना है कि जब तक सफलता प्राप्त नहीं होगी तब तक

विश्राम नहीं करेंगे।

(2) बच्चों क्या आपने इस बात पर गौर किया है कि त्रेता युग में हनुमान जी को प्रभु राम मिले द्वापर युग में अर्जुन को प्रभु कृष्ण मिले परन्तु आज हमारे चारों ओर हनुमानजी के तो मन्दिर है परन्तु अर्जुन का कोई मन्दिर नहीं है। क्यों?
क्योंकि हनुमानजी निश्चया बुद्धी के थे अर्थात जो सोच लिया उसे पूरा करके ही दम लेंगे। कहीं कोई अविश्वास नहीं है परन्तु अर्जुन संशय बुद्धी थे। हर बात पर प्रश्न करते थे, हमेशा द्वंद में रहते थे। तो हमें हनुमानजी की तरह बनना है।



डॉ. नवीन शर्मा

सहायक आचार्य

रसायन विभाग

राजरथान विश्वविद्यालय

बागवान



आज अलौकिक जीवन ज्योति,
मन में द्वीप जलाती है,
अम्मा बाबा की खिलती मूरत,
दिल में पुलकित हो जाती है।

सहस लखीरें भ्रम की देह पर,
पर आँखो से प्यार टपकता था,
मानो सूखी जर्जर धरती पर,
झर-झर के मेघ बरसता था।

ज्येष्ठ की तपती धूप सहकर,
हम पर छाया बरलाने को,
देह वृक्ष को खाक कर दिया,
इन पौधों को वृक्ष बनाने में।

जब सावन ने दरस्तक न दी,
उपवन रह-रह कर मुरझाया,
बगिया के जीवन की खातिर,
बन मेघ मृदुल जल बरसाया।

अब जीवन की संध्या हो गई,
पथराई आँख तरस आई,
ओ पंछी इक बार तू आजा,
ये जीवन ज्योति बुझ आई।

ओ ऊँचे उड़ने वाले परिन्दों,
माना सब कुछ तुम पा जाओगे,
पर जीवन संध्या पर जब घर लौटोगे,
न देख उन्हे तुम पछताओगे।

फिर झर-झर आँखे बरसेंगी,
बाबा का आलिंगन पाने को,
थकी कंपी काया तरसेगी,
ममता के आँचल में सो जाने को।

फिर न होगा अम्मा का साया,
न बाबा की प्यारी बातें,
फिर धुट-धुट कर तुम रो लेना,
कितने दिन कितनी रातें।

बागवान अपनी बगिया को,
तन-मन सब अपना दे जाता है,
नन्हें द्वीपों में ज्योति भरकर,
खुद चिर निद्रा में सो जाता है।

माता-पिता के खेने का अलम्बान्न शायद बच्चे न कर पायें लेकिन इनके न खेने की
अनुवृत्ति क्षण भर में आँसुओं को अजल और जीवन को पतझड़ के भाव से भर देती है।

जगत पात्राशर

युवा कवि
(कवि सम्मेलन)

Beauty of Flaws

They ask me to fit
But I say, it's a myth.
Why should I try to be a perfect girl
When my flaws give me the best twirl!
The norms set, the rules that regulate
Who are they to guide, no wounds and cuts anymore I hide!!
How can the drill be the same for all of us,
when unconnected is everyone's fuss?
Why should we follow the canons by them?
When each one of us is a purely different gem.
You don't like pink and the prettiest it is, I think
You like it spicy and salty you said
While I enjoy a chocolate dessert spread
If we differ in such little things in life
How can I be perfect in your eyes?
What makes us obsessed over someone's mess
Is only the beauty of flaws they possess!

Dr. Swati Jain

Associate Professor, Department of EAFM

Because You are Special!

“There may be someone prettier than you, smarter than you, richer than you, or happier than you. That's good for them. But remember... You focus on YOURSELF.....”

We always compare ourselves to everyone else, what they are doing, how others look, and what they have achieved in their lives, so much that we just don't remember who we actually are. This is to the extent that we forget our qualities and that we are unique and a great asset.

Believe that you have qualities that no one else has because you were born unique. The sooner you realize that and begin afresh, it would be better.

Start living your life as per your own norms, be free from caring about other people's opinions and you will see a NEW - 'HAPPIER YOU'.

Never forget that we all have something amazing to offer to the world. The best part is that there is no one on the earth that is the same as you, not even one! So, understand this, and be happy and optimistic.

Remember every day to celebrate the AMAZING AND UNIQUE “YOU”!

Dr. Tanu Yadav

Asst. Prof., Department of EAFM

Beauty in Life

Life might be a struggle, but there's beauty in it too.
Think about its positive aspects and you'll find it to be true.

Downfalls may occur, but they do not last forever.
Work for them and make them blur.
Allow no one to let you down,
not today, not tomorrow, nor ever.

You have the strength within you,
So, do not fill yourself with doubt.
With dedication, you can breakthrough
Build confidence and just let your power come out.

You are in your own control, keep that in mind.
Do not be afraid of anything, and do not ever stay behind.
Gather and throw all the negativity away, then a new path will appear in your sight.
And life will not be a struggle anymore, but beauty with delight.

This is how you will perceive the Beauty in Life!

Uma Mathuria

Lecturer, Department of Chemistry



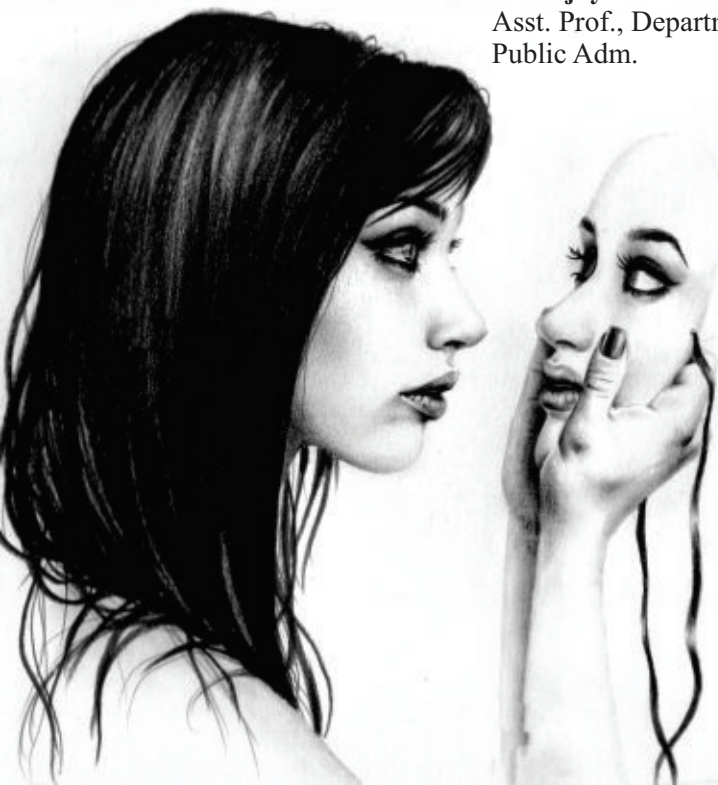
Know Yourself, Be Yourself

Knowing yourself is crucial in life to be successful. When you know more about your values, thoughts, personality, or beliefs then you can decide your own path, and you can be your own guide. If you are happy with yourselves, then you can spread happiness around yourself. So, if you connect with yourself then life automatically will be transformed. The following points should be practiced to know yourself:

Spare time with yourself -Yes, provide yourself with the 'Me Time'. Always keep the child in you alive. Do what you like. If you like to read, play, write or do something creative or traveling, then take out time for that. Try to revisit your values, start a new hobby or do something new like reading a new book. Always be ready to learn something new in life. If you stop learning you start losing yourself.

- Avoid comparing yourself with others - Stop comparing yourself with others, always focus on your life goals and work on the skills which you can get or achieve. It will help you to get success in your life. Always try to be a better version of yourself.
- Family comes first- Nothing is more important in life than family. No matter how busy you are, always try to spend time with your family members. It will make you feel happy and energetic.
- Choose your company wisely -The people around us also have a great impact on our lives, especially friends. It is better to choose friends who are genuine, positive, optimistic, helpful and generous. They will make your life easy and better.
- Learn to respect yourself - It is good when others respect you but respecting yourself is the first step to finding yourself. Self-respect is about life satisfaction. It means taking care of yourself mentally, emotionally, physically, and socially. Self-respect is understanding and honoring your own needs. So, "To grow yourself -you must know yourself"- John C. Maxwell.

Dr. Vijay Laxmi Mishra
Asst. Prof., Department of
Public Adm.



Your Perspective Can Change Your Life!

Whether life is easy or hard, rough or soft, happy or sad, it depends upon the perspective that an individual has. We have often heard people saying that 'Life is beautiful' but on the other hand the perspective can be another, 'Life is a puzzle'. It all depends upon personal beliefs, life experiences, perceptions and learnings. In umbrella terms, we can say it all depends upon our cognitions.

As we have all heard about heart-wrenching incidents in society, related to Suicide, Self-harm, Threatening Behavior, Stress, Depression and Anxiety. Even a single incident leaves many questions unanswered.

A widespread picture represents two individuals standing on either side of the number 9 that has been drawn on the floor, for one person it appears as the number 6, while for another it appears to be the number 9. Who is right, and who is wrong, is a difficult thing to identify. But somewhere they both are right in their perspectives.

So, your perspective on life determines how you see life, how you handle relationships, your troubles, your stresses, your opinions, and your decisions. It not only affects you; it affects everything and everyone around you.

Whenever you feel like a failure, think twice about it and ask yourself the following questions:

- Does life give you the guarantee of always being successful?
- Will life end if your goals are not met?
- What you would suggest to a friend of yours if he/she was going through the same situations as you?

The answers to these questions can help you change your perspective toward yourself. You would not feel like a failure anymore.

Having a good perspective gives you so many advantages. You can easily create a meaningful life and able to balance all aspects of life that are social, interpersonal, occupational, financial, and spiritual.

Here are a few suggestions to lead a happy and optimistic life.

- Change your perspective on life.
 - Stop complaining.
 - Make happiness your best friend. Happiness adds positivity to life, it clears the fog of despair.
 - Reduce the use of social media because it drains your mental energy.
 - Keep the mobile phone away if not required.
 - Habits play an important role in life, so start with two tiny habits for a few days for 30- 45 minutes daily :
1. Read a book for at least 30 minutes
 2. Relaxation exercise for 45 minutes

Always remember there are many ways to work better. Identify your problem. Challenge them in mature and rational ways. Share your thoughts with your well-wishers, and resolve your problems. "If there is a problem, there will definitely be a solution to it."

Dr. Ruchi Agarwal

Asst. Prof., Department of Political Science

Physics Around Us

From morning till night, we are surrounded by Physics in various direct and indirect ways. Some phenomena of the same are enlisted here. Firstly, when we turn on the light, electrons travel at a high speed between the poles. These electrons hit the mercury gas and produce radiation. Secondly, when we get ready in front of the mirror, Physics once again plays a crucial role. Light beams from every point on our face travel to the mirror, where they are reflected. Some of those reflected beams will travel toward our eyes and hence we are able to see ourselves.

Another example is when we go out, we use two-wheelers/four-wheelers or any public transport. Here, Physics plays its role in providing a safe and secure ride. Due to friction between the wheels and surface, we can easily drive our vehicle and apply the break. In addition, on the banking of the road, in which the outer edges are raised for the curved roads above the inner edge to provide the necessary centripetal force to the vehicles so that take a safe turn.

The pen is a thing that is used by everyone. But have you ever thought about how does ink work? The ink works on the concept of gravity. When the pen moves across the paper, gravity forces the ink down onto the top of the ball and it transfers to the paper.

Similarly, when we use a knife for cutting purposes, the blade is drawn against a material, and friction between it and the edge causes the initial tear through shearing force.

Also, when we turn on the TV, which is based on radiation Physics including the TV camera that turns a picture and sound into a signal, the TV transmitter that sends the signal through the air, and the TV receiver that captures the signal and turns it back into picture and sound. In using mobile phones, lifts, pressure cookers, steam irons, microwave, and signals on the road, the concept of physics are used.

Physics is not just a subject, it's all about what we observe from morning to night and the reasons behind it. Hence, Physics is around us.

Radhika Parashar

Lecturer, Department of Physics

Importance of Chemistry

Most people choose to write their essays about how chemistry has played an important role in everyday life. I have chosen to ask: "How doesn't it play a role in everyday life?"

The simple fact is that chemistry plays a crucial role in every person's daily activity, from the moment we are born! So, what role does chemistry really play in everyday life? Well, this involvement usually begins with the first thing, each morning. Most people wake up to an alarm or radio. These common household items contain batteries, which make them very chemically dependent. These batteries contain positive and negative electrodes. The positive electrode consists of a C-rod surrounded by a mixture of carbon and manganese dioxide. The negative electrode is made of zinc. Chemistry plays an important role in the discovery and understanding of materials contained in these and many other common household items. Things like household cleaners and water purification systems are vitally dependent on chemistry.

Next, though it is not widely known, chemistry is also heavily involved with the manufacturing of things such as makeup and soaps. Each time you bathe you are witnessing chemistry at work. Chemicals such as Acetyl alcohol and Propylene glycol are typical ingredients in the soap used to wash your hair and skin. The chemical agents used in makeup and nail polish would not be possible without an understanding of the chemicals involved.

Almost anything you do during a normal day involves chemistry in one way or the other. The gases and tyres used in the cars that we drive, the makeup we put on our faces, the soaps, and cleansers that we use every day, burning of wood or other fossil fuels. Chemistry is all around. So, whenever you do your daily activities, remember to thank chemistry.

As my teacher always says to remember, "Chemistry is Life!"

Mahima Kapoor

Asst. Prof., Department of Chemistry



Career and Success

The words seem to be simple but are the most complicated among students. The crucial phase for choosing a good career option starts after the 10th standard when a student is asked to choose optional subjects for the next class. Most of the students are unable to take the right decision as they are forced according to their parent's choices. With the rapid changes in technology, the top subject choices are Science, Mathematics, and IT. Students want to be either Doctors or Engineers. They seek their future in these fields. The question here arises, 'Is there nothing else beyond these fields?' Nowadays education is not limited to a single discipline, it has become multidisciplinary. The success of a student is not based on the forced subject choices but it is the interest and perspective of the student that create the fundamental of his/her success in career.

In today's world, there are so many opportunities and choices in each and every field of any subject, whether it is Science, Arts, Commerce, Computers etc. All fields are interrelated. So, there is no need to rush behind only two career options. The students should create their own opportunities. They should try out the other disciplines. In my opinion, every student should listen to their minds and hearts and follow their passions. They should follow a simple life, dream high and work hard. Each student should find his/her own path. Then only success will knock on their doorsteps.



Dr. Sapana Khandelwal
Asst. Prof., Department of Botany

Do You Want To Eat Five Cakes Per Day?

If we like chocolate cake, why don't we eat five cakes per day at the same time? The reason is diminishing marginal utility. The first chocolate cake gives us maximum utility. The second cake gives us less utility than the first cake.

As the number of cakes increases, the marginal utility of each successive cake keeps on decreasing. The fifth cake may make us sick and give a negative utility. The marginal utility of a good diminishes as more of it is consumed in a given time period. All of us experience this law in daily life.

Similarly, there are also diminishing returns to money. That is why we don't spend all our time working. Extra money gives increasingly less satisfaction and reduces leisure time.

Dr. Sangeeta Jain
Lecturer, Department of Economics

Dark Earth

Indigenous people of Amazon forests created a 'dark earth' in the past. Their technique could provide a blueprint for developing methods of sustainably locking atmospheric carbon in tropical soils, helping fight climate change. This fertile soil may be a massive, overlooked source of stored carbon growing crops in the Amazon's nutrient-poor dirt is tough. In a tradition that may be thousands of years old, indigenous Kuikuro people in Brazil overcome this issue by making their own fertile soil from ash, food scraps and controlled burns. Indigenous people in the Amazon may have been deliberately creating fertile soil for farming for thousands of years. At archaeological sites across the Amazon River basin, mysterious patches of unusually fertile soil dot the landscape. Scientists have long debated the origin of this 'dark earth', which is darker in color than surrounding soils and richer in carbon. Now, researchers have shown that indigenous Kuikuro people in south-eastern Brazil intentionally create similar soil around their villages. The Western world has long viewed the Amazon as a vast wilderness that was relatively untouched before Europeans showed up. At the center of this argument is the idea that the Amazon's soil, which is poor in nutrients like other tropical soils, precluded its inhabitants from developing agriculture at a scale required to support complex societies. But a slew of archaeological finds in recent decades - including the discovery of ancient urban centers in Amazonian areas of modern-day Bolivia - has revealed that people were actively shaping the Amazon for thousands of years before the arrival of Europeans. Most scientists today agree that the presence of dark earth near archaeological sites means that long-ago Amazonians used this soil to grow crops. But while some archaeologists argue that people purposely made the soil, others contend that dark earth was laid down through geologic processes. But research revealed that Amazonian villagers of Kuikuro actively make dark earth - egepe in Kuikuro - using ash, food scraps and controlled burns. The researchers collected soil samples from around Kuikuro villages and archaeological sites in Brazil's Xingu River basin. The team found "striking similarities" between dark earth samples from ancient and modern sites. Both were far less acidic than surrounding soils - probably thanks to the neutralizing effect of ash - and contained higher levels of plant-friendly nutrients. Dark earth could store a lot of carbon in the Amazon. These analyses also revealed that dark earth holds twice the amount of carbon as surrounding soils on average. Infrared scans of the Xingu region suggest that the area is pockmarked with dark earth and that as much as roughly 9 megatons of carbon - the annual carbon emissions of a small, industrialized country - may have gone unaccounted in the area, the researchers reported at the meeting. This number, while preliminary, could inflate to roughly the annual carbon emissions of the United States when all dark earth across the Amazon is taken into consideration. Figuring out how much carbon is actually stored in the Amazon could help improve climate simulations. Pinning down the true value of carbon stored in the Amazon's dark earth will require more data. For one thing, the technique highlights how ancient people were able to thrive in the Amazon by developing sustainable farming that doubled as a carbon sequestration technique. With more and more greenhouse gases entering the atmosphere, making dark earth - or something like it - could be a method of mitigating climate change while supporting agriculture in the tropics. People in the ancient past figured out a way to store lots of carbon for hundreds or even thousands of years. Maybe we can learn something from that.

Dr. Vijaylaxmi Gupta

Asst. Prof., Department of Zoology





Fair

Hand in hand,
side by side,
I sit with my grandmother,
a little sad but alright.
Endearing love of her,
is some mystery to me
Yet magical.
Entering the fair
Extends the care,
leaving the hands to buy everything,
that seems over there.

She sprints towards the hawkers, the peddlers,
demanding every sort of material.
Grandma continues scowling,
with the same hidden kindness.
The compassion she had
made every child and wanderer
spellbound.

My face dazzled with enthusiasm,
like a bright sunny day.
The will to live forever with the grandmother
To gain her love and care
To fly along with balloons up in the sky!
Fair is an instrument of attachment,
to bound the relation of aces,
to bring excitement in life's all stages.

Anita Rawat
B. Com. Part-I

Why Education is Important in our Life ?

Education is a helpful tool for learning and gaining wisdom. It is an important tool that makes a sensible person identify his/her rights and responsibilities for family, society, and nation. It helps us to fight against injustice, corruption, etc. Education provides stability and confidence, financial security, self-independence in our lives, and equality in society. Education is essential for every person's entire growth in every field. It helps to learn the value of time, money, etc. Without education, we can't fulfil our own dreams of doing something different in life. Whereas, with the help of education, we can easily handle technology and adjust to it. Hence, Education is very important in our life.

Dr. Ruchi Saboo

Asst. Prof., Department of Mathematics



ADOLESCENCE

When I sit in silence,
I think I have lost my true self.
The one who was joyful and loved
being with everyone,
but now it feels more suffocated
Adolescence changes us all.
Everything feels like a rainbow
At the beginning.
Rainbow doesn't bring a difference in our life
And later it fades.
It's like an escape to a new world,
away from everything,
Harsh but beautiful,
it gives us a chance to modify ourselves,
I choose to be calm,
I choose to fight for the new normal,
in this phase called Adolescence.

But even then,
I sense an intense itch,
an itch of comfortlessness,
Which tickles and asks me
Not to trust anyone!
To be more reserved!
I feel confused, at times,
it feels like I need a guide!
Then, all of a sudden,
all I want is me
And a peaceful climate.
To be in a new Phase isn't an easy task
To adopt the new changes,
even a caterpillar goes through a lot,
to become a butterfly so beautiful.
I am trying to be a better version of myself
I am now more determined!

Ziya Fatima
B.Sc. Part-I

Green Finance Practices in India

Green Finance involves financial institutions supporting environmental friendly ventures and giving loans to those businesses which have just turned green or are attempting to become environmentally viable and in this manner help to re-establish the regular habitat. Green Finance implies consolidating operational upgrades, innovation, and changing customer propensities in the money business. It also implies adopting environmentally friendly practices. Today financial institutions and establishments like banks are attempting to embrace green account rehearses. This comes in numerous structures, for example, online banking rather than branch banking, taking care of tabs online as opposed to mailing them, opening up CDs and currency showcase accounts at online banks rather than huge multi-branch banks, or finding the neighborhood bank in the region that is finding a way to help nearby green activities. Foreign banks are rehearsing green financing on a much more genuine note. The Indian account foundations are as yet stepping into this type of financing. All things considered, a significant number of them are quick to effectively seek after this methodology. For instance, an investment in a processing plant that contaminates intensely will by and large have a higher money-related pace of return than a manufacturing plant that puts resources into costly contamination control innovation, thus demonstrating a slower pace of return. Green finance can be promoted through the Government, citizens, and businesses.


Government-The Government has to build a regulatory framework, Institutional setup, Tariff, the charges to be applied and the subsidies to be provided to the investors and the guarantees to be given to the investors in the form of insurance coverage and other safety majors.

Business-The business has to take the middle path in the form of linkage between the Government and the citizens. Moreover, they have to go for technical innovations, financial share, and the managerial role they have to play in facilitating both.

Citizen-The citizens here mean the public and the entity which needs to improve the lifestyle of going green, they have to show willingness towards these green innovations, paying capacity, awareness of the green financial schemes, and the concept of going green.

Dr. Pragya Sharma
Asst. Prof., Department of BADM

Indergarh in Rainy Season



Indergarh in rainy season
Amid the hills a beautiful region.
Situated in a saucer shape
Watch out! Its landscape.
Small bushes can now be seen
Bleak hills turn in green.
Rocks and roads, rivers and round
Mossy stones and grassy ground.
The land of antiques and
Enchanting monasteries.
Orchards of lemon, plum,
and guava trees.
Above the pond and
above the town,
telling a tale of
kings and crown.
Glorious fort with a great wall,
full of glamour overall.

Sristy Sharma
Lecturer, Department of English

Tips to Achieve Goals

“Education is the passport to the future, for tomorrow belongs to those who prepare for it today.”

Dear Students,

To stay committed and excited about achieving a goal, the first thing you need to do is to set a goal. As it is rightly said, “Every accomplishment starts with the decision to try.”

An institution prepares you for your future, and your exams, essays, thesis, and due dates may turn out to be a heavy workload weighing you down. In these moments, you should always remember that college provides you with a platform to learn about a subject that you’re passionate about. When you enrolled, you had a hunger for learning and all you have to do is find that motivation. What you learn in college today will create opportunities for making your own way on the job market in the future and it’ll help you to build a great foundation. The power of learning soft skills like teamwork, time management, and critical thinking will guide your way through group projects and deadlines. Knowledge is a power that stays with you as long as you keep using it. Use this power wisely to grow and become the person you want to be.

Dr. Krati Saxena,
Asst. Prof., Department of BADM

PERSONALITY DEVELOPMENT

Personality is an important aspect of the life of a human being. It is not only a person's professional success but also, his overall behavior and attitude in life that shapes his personality. Personality as a whole means a combination of characteristics of an individual that includes a part of thoughts, feelings, attitude, behavior, communication ability and features. It has been believed that a child inherits a lot of personality traits from his/her parents. Every individual is different from each other and possesses a personality of his own that is unique in every form. You must have noticed that there are people who have a lot of friends in school, college, or office and there are also people who don't socialize much and have very few friends. It is mainly due to differences in thinking and most importantly the difference in the personality of people.

Our friends and surrounding choices are determined to a great extent by an individual personality. Personality development is a tool that brings out capabilities and strengths in making oneself aware of his/her inner self and becomes more confident to face the outside world. It has been believed that the personality of a person takes its basic formation in the beginning period of childhood. Childhood experiences in the family and society are very crucial that helps an individual to develop certain traits. Even the environment of the school has its positive or negative impact on personality. The personality is later moulded based on the impact of values, positive and negative factors in life. However, the significance of this understanding is that we can always keep improving our personalities. Adults need to be very careful while bringing up a child because scars on the psychology of a child may have permanent marks on life. To develop positive thinking parents must relate to each other in a positive way.

There are a lot of people who still underestimate the importance of having a pleasant personality and think that it just means being born with good looks. This is simply not true. The reality is that being good-looking is just a part of a good personality and not everything. For a good personality, a lot of other characteristics are needed like communication skills, politeness, good listening skills, vocabulary, the art of engaging in communication, neatness and attitude. All these elements combine together to make up a good personality. In present times, competition is increasing day by day and there is no lack of talented individuals possessing high academic results and a willingness to work hard to achieve their goals. You cannot win by talent and hard work alone these days. Apart from these two things, there is a strong need for a good personality too. Personality development is a crucial ingredient and success that life needs. So, a few tips should be followed:

Gain knowledge -

As the saying goes, "Knowledge is Power". It is very important in today's competitive world. Nobody is impressed with a person who doesn't have knowledge about his work as well as his surroundings and does even know what is happening around the world.

Healthy body-

An important part of the personality is your appearance and your physical health. It is very important to maintain good physical health for a good personality as well as for a healthy life. It is very important to work out regularly and maintain a healthy physique.

Dress smartly-

As a smartly dressed person is admired everywhere it is not always that only expensive clothes are the best. A great deal of attention while choosing the right clothing that suits your physique.

Speaking style-

It is very important that you maintain a good speaking style and expression as well. All this will improve the overall personality and will increase the scope for success in one's life.

Mehnaaz

B.Sc. Part-III



Honour Killing

"Izzat" is the term given by the people after killing men or women of their own families, "Izzat bachani thi islie marr dia". But have you ever wondered about which 'izzat' or respect they refer to? Or does killing their own family members help them in gaining respect?

The answer to this question is a big 'NO'. Don't know whether these killings for honour make them reputed persons in society or not but it makes them murderers. So, before discussing the crucial topic of honour killing, let's discuss what does it actually means.

Honour killing is defined as 'killing for honour', a death that is 'awarded' to the women or men by their own family members for marrying against their wishes or having a pre-marital relationship, marrying within the same 'gotra' or marrying outside the caste. There are some other factors also contributing to this crime, like rape cases, homosexuality, a child born with some unwanted disorder, the birth of a female child etc. But, the main reason contributing to this heinous crime is the distorted mentality of the people and false social pride. Parents or relatives can not see their children getting married against their will. In spite of fighting against such crime, people keep themselves quiet and attempt to kill the victim because such children are considered as a 'Black spot' in the social status of the family. The presence of 'Khap Panchayats' is also responsible for the honour killings.

Unethical acts like this not only harm India's dignity and diversity but also damages its socio-cultural structure and degrade the level of a healthy social society. It is time to change society's mentality. More strict laws against such people should be made and the youth of the country should be made aware of its consequences.

Vamika Tyagi
B.A. Part-I



Storm Inside

"I am a vessel of the Storm I carry within, all my thoughts, anxieties and miseries make my shoulder heavy"

At night, I'm in a battle with myself,
my mind and heart are rivals of all time.
Mind says to stay strong and worry less.
but my poor little heart holds a long story within
story of memories, story of pain and hurt.
It re-winds all the happy and sad memories

In spite of the ongoing ache,
it still holds tight and fights back
In this huge battle of pain and misery,
'Insomnia' has become an unwanted cheerleader.
When it's morning and my eyes droop with heavy sleep,

I'd need some more time inside my quilt
Let me sleep a little longer,
I had a long battle last night inside my head that
You have no idea about
But now as the sun has risen
And the rituals have to be done
I'm already with the heavy mask of a smile again
By any chance, if the mask falls off
Don't ask me what's wrong
Cause, I'm a vessel of the storm
I carry within.

Deepika Jangir
B.A. Part-I

WOMEN AND ENTREPRENEURSHIP

'Entrepreneur', this word is derived from the French verb 'entreprendre' which means to do something or to undertake some work. So, entrepreneurs can be defined as 'adventurers' or 'undertakers'. Entrepreneurship belongs to the STEM field which requires an innovative and learning attitude. Since the 17th Century, women also got involved in entrepreneurship.

Before 17th century, the human mind was conditioned in such a way that, if someone heard the word 'Entrepreneur', they would think of a 'male'. A word like 'Chairman' tells us that our society is habitual of seeing a man in the supreme position. But the process of changing this mindset was started in the United States by a 16-year-old girl 'Eliza Lucas Pinckney' who started the cultivation and dying process in South Carolina which made the difference and the word Entrepreneur became free from boundaries of gender and age. In the 20th century, she was the first woman to be inducted into South Carolina's Business Hall of Fame. In 1766 the world saw its first women publisher from America Ms. Mary Katherine Goddard. Thus, the cycle of growth of women's entrepreneurship gained momentum and added many innovative, courageous and adventurous ladies on the list.

In India, the position of women was very high in Vedic times but it deteriorated due to regular invasions. In the Middle Ages, Jijabai was a famous agricultural entrepreneur. During the 18th and 19th centuries, they were limited to the field of handicrafts, fashion, weaving, etc. The wheels started getting pace in 1991 with the coming of the New industrial policy which encouraged privatization. Statistics from 1981 tell us that there were 5.2% of women out of the total self-employed workforce. Kalpana Saroj was one such who started KS Film Production. She built a successful real estate business. In present times, Women's entrepreneurship has seen two major changes which are in authority and the field of business. Earlier they used to inherit the business of their fathers or husbands, but now they are introducing start-ups. They are self-made, having started a business from scratch and taking it to new heights.

Moreover, the field of business has extended to Tech, Defence, Education, etc. According to an estimate, in the last 20 years, the number of women in business has grown by 114%. Africa is one among those that have more women entrepreneurs than its counterparts.

Famous names in field of women entrepreneurship are Indra Nooyi (former CEO, PepsiCo.), Ms Shahnaz Husain (Herbal Beauty Queen), Ms Naina Lal Kidwai (Group General Manager & Country Head-HSBC, India), Ms Ekta Kapoor (JMD & Creative Director, Balaji Telefilms), Ms Kiran Mazumdar Shaw (Chairman & MD, Biocon Ltd.) Ms Falguni Nayar (CEO, Nykaa) and the list continues.

In spite of this flight, women entrepreneurs, especially in India face Socio-Cultural and Economic barriers. Some initiatives had been taken to overcome these barriers. Working Women's Forum, Indira Mahila Kendra, Mahila Samiti Yojana, and Assistance to Rural Women in Non-Farm Development (ARWIND) are a few initiatives. Women entrepreneurs have shown their potential in very less time. When men and women both will come together in entrepreneurship, the world will see new innovations and technological changes. This will result in a single principle of life - Equality.

Tamanna Yadav
B.Sc. Part-II



Why English is so hard?

We will begin with a box, and the plural is boxes,
but the plural of ox becomes oxen, not oxes.

One fowl is a goose, but two are called geese,
yet the plural of moose should never be meese.

You may find a lone mouse or a nest full of mice,
yet the plural of house is houses, not hice.

If the plural of man is always called men,
why should not the plural of pan be called pen?

If I speak of my foot and show you my feet,
and I give you a boot, would a pair be called beet?

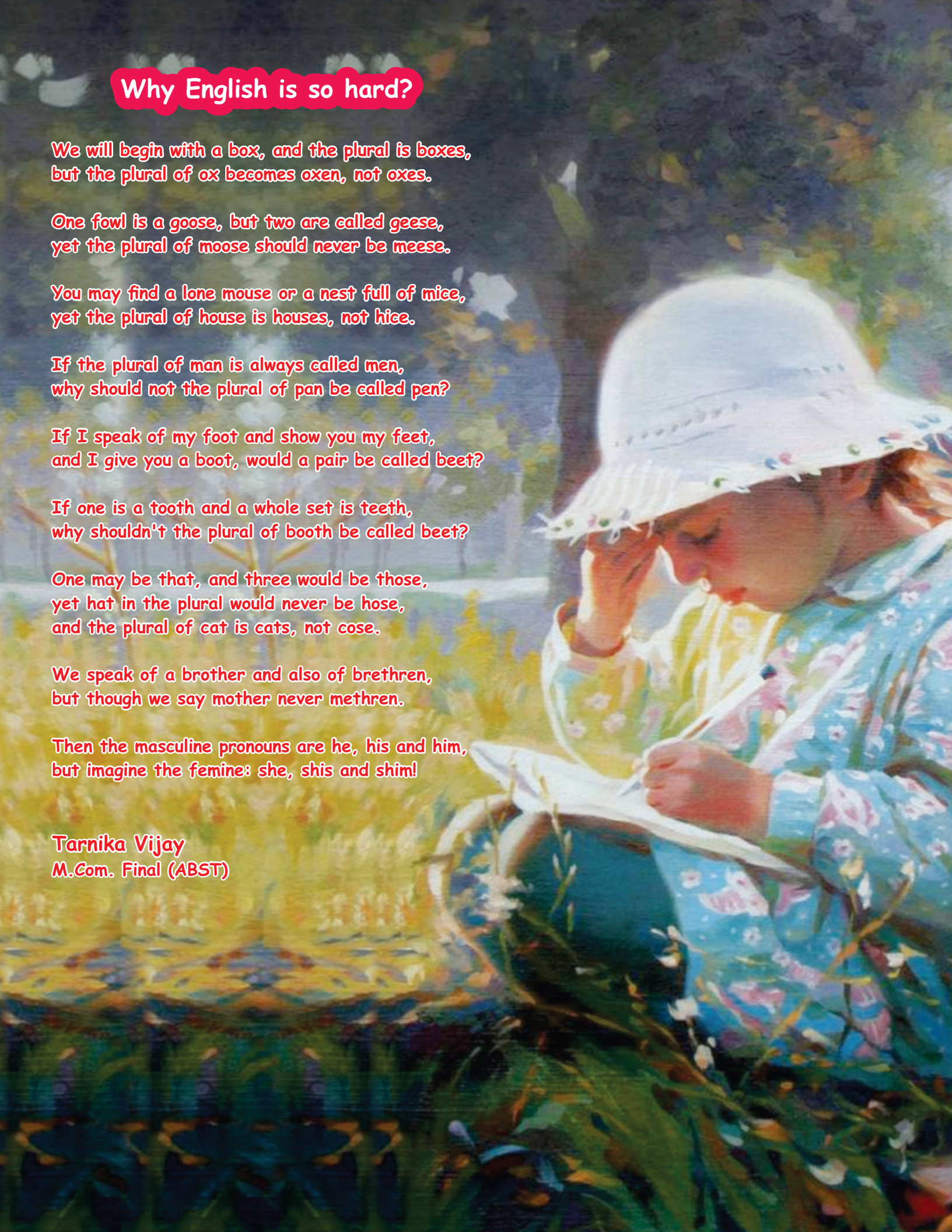
If one is a tooth and a whole set is teeth,
why shouldn't the plural of booth be called beet?

One may be that, and three would be those,
yet hat in the plural would never be hose,
and the plural of cat is cats, not cose.

We speak of a brother and also of brethren,
but though we say mother never methren.

Then the masculine pronouns are he, his and him,
but imagine the femine: she, shis and shim!

Tarnika Vijay
M.Com. Final (ABST)



Real Hero of Our Country

You fight for the country's protection,
and challenge yourself every time,
to make the country shine,
you are not only a protector,
but a hero who serves 24*7.
You are the pride of our country,
yes, you are the Soldier of the country,
you are a perfect example of Discipline,
of Courage and Patriotism,
staying away from your family,
to protect several other families.
Yes, you are the real milestone
of our country.
You are the real hero of the Indian army!

Shraddha Dadhich

B.Com. Part-I

कर्तव्य

उठे चलो, बड़े चलो,
देश के वीरों की वीर गाथा गाये चलो।
जिन्होंने दिया अपना बलिदान है,

उसको भी देना सम्मान है
इस देश की मिट्टी ने कई वीरों को पाला है,
जिन्होंने हमारे अतीत और वर्तमान को संभाला है,
उनके इस योगदान को भी सराहना है।

आज बटों है, देश कई भागों में,
उसमे एकता का संदेश फैलाना है,
और देश के हर नागरिक में उत्साह जगाना है।

भारत माता हमें पुकार रही है,
दुश्मन की धरती हमें ललकार रही है।
उठे चलो , बड़े चलो,
देश के वीरों की वीर गाथा गाये चलो।

वन्दना

बी.एस.सी. पार्ट-II



MOLESTATION

A variety of problems persist in society that are concealed and can't be detected. Although, problems may be terrible for many reasons, they are still difficult to identify. One such problem is "Molestation". It takes various forms like sexual assault, marital abuse, marital rape, child molestation, domestic violence and online abuse, etc.

The rates of violence against women keep on increasing. Domestic violence in India is an entrenched problem and it has only been exacerbated in recent years. According to the National Crime Records Bureau's (NCRB) 'Crime in India' 2019 report, about 70 % of women in India are victims of domestic violence.

One such form of domestic violence is marital rape. Marital rape, the act of forcing your spouse into having physical love without her permission or proper consent. Today, marital rape has been accused in more than 100 countries. Unfortunately out of 36 countries, India is one among them where marital rape is still not yet criminalized.

Another form is Child Molestation. It is a sexual crime that has always been an open topic of discussion for many families, religious groups, and communities. According to the Child Molestation Research and Prevention Institute (2010), "It is estimated that at least two out of every ten girls and one out of every ten boys are sexually abused by the end of their 13th year". It is vital that adults find as many opportunities to speak with their children at an early age, as to strongly monitor the adults that their children interact with on a daily basis. According to National Child Abuse Statistics (2010), 90 percent of child sexual abuse victims know the perpetrator in some way; 60 percent are abused by family members.

Online abuse is also a form of molestation. Social media is defined as the interaction of groups or individuals where they produce, share or exchange opinions over the internet and also in virtual communities. The media not only serves as a source of information but also provides a source of entertainment. It serves as communicating, texting, image, audio and video sharing. As the usage of media is increasing rapidly among people, youth is the most affected. Many a time, it is seen that men create fake accounts on social media and also make fake calls. They post morphed pictures to defame the girls. Due to this, they face severe mental torture and suffer with this type of molestation.

But in this situation, a complaint can be lodged. The investigation will be done under the IT Act, IPC, and TR Act. If they can't take any action against your problem then you can go to the nearest Court in your area or to the Superintendent of Police in your area and lodge the complaint.

If we want the safety of our country and its people then we should remain aware of all the acts and rights. We should take action against domestic violence, child abuse, marital rape, online abuse and also against other types of molestation. We should not hesitate to take any action against these types of molestation. Silence can encourage such heinous acts, so, we should raise our voices against it. This can help us lead a safe and fearless life.

Khushbu Jain

B.A. Part-III



Laughter is the Best Medicine

**“You don’t stop laughing because you grow older.
You grow older because you stop laughing.”**

– Maurice Chavalier

When we memorize our childhood, we realize that those times were tension free. We used to laugh a lot and enjoyed every moment. There were neither problems nor responsibilities. After growing up, we realized that life is not the same anymore. Everyone is occupied in their lives.

In the pursuit of materialistic gains, we constantly work under pressure, and due to this, we are unable to enjoy the pleasures of life. Laughter acts as the best medicine to manage a stressful life and make it bearable.

In stressful situations, sharing a laugh with our friends refreshes our minds and body. Nothing calms and relaxes our body more quickly than a good laugh.

Laughter is the best medicine for every problem we go through. Those who understand the importance of laughter and a happy face, always remain focused and alert. It reduces the stress in life. It is considered one of the best therapies in the world. Whether it is just a smile or loud laughter, positive energy spreads in the whole atmosphere making every situation calm and friendly. It has many health benefits like it can minimize the risk of heart disease.

Laughing therapy is just like deep breathing. It reduces our blood pressure and calms our body when we laugh, also lessens the release of stress hormones in our body that helps in improving our mental health.

Laughter is also considered a key to enhancing energy inside our body. There are so many people in hospitals who have chronic diseases. They are under so much pain and stress that they even have no clue about the last time they actually smiled.

The following ways can help us to lead a happy and stress-free life:

- Sparing time from work and focusing on our well-being.
- Watching comedies and reading comics to bring a change in our mood.
- Spending time with our friends and family
- Indulging ourselves in activities like painting, singing, dancing or games.
- Playing with pets.
- Practicing laughter yoga.

If we develop a habit of staying positive and happy in every situation then all other negativities will automatically be removed from our lives.

Afreen

B.A. Part-III



बेरोजगारी

बताओ किस तरह लिखे, बेरोजगारी के किस्से,
कोई भूखा सोया, कोई प्यासा ही सोया,
पुरखों की जमीन रखी गिरवी, माँ के गहने दिये बेच,
कि सरकारी नौकरी आ जाये, उस गरीब के भी हिस्से।

पुरखों की वसीयत भी पानी थी,
माँ के पैरों में कड़ी पहनानी थी,
परिवार के इन सपनों के आगे,
नींद कहाँ थी उस प्रतियोगी के हिस्से।

पर परीक्षा के बाद ही उस छात्र ने,
फंदे की रस्सी से ले ली अपनी जान,
क्योंकि किसी ने 15 लाख देकर,
नौकरी पक्की कर ली अपने हिस्से।

क्या बाकी रहा उस किसान के हिस्से,
हाथ से उसके गया बेटा, जेवर, और जमीन,
बाकि रहा कर्ज, आँसू और बेटे के सपने रंगीन,
बताओ किस तरह लिखे बेरोजगारी के और किस्से।

चन्द्रब सिंह राठौड़
कबिष्ठ लिपिक



मुकद्दर

जितना रब ने दिया उसे अपना मुकद्दर मान लिया
जिसने जीने की राह दिखाई उसे रहबर समझ लिया

छोड़ दे उस जिद को जिसमें कोई दम नहीं
मिला ना हाथ किसी से जहां पर हम नहीं

जिसे चाहा दिल से वो कोई और नहीं वहम था मेरा
वह मुझे वाकई ख्वाबों में मिली वो करम था मेरा

अब तो दरक रहीं हैं शर्मोहया की हर दीवार
असल मुहब्बत से क्या वास्ता अब बिकाऊ है हर किरदार

जिस दिन से तू मिला बदल गई जिन्दगानी मेरी
ये जर्मी, आसमां और सूरज, चांद गवाह है इसके
तेरे बाद किसी से मिलने की चाहत नहीं रही मेरी
बस तू, तू ही तू हर चीज में दिखता मुझे तू ही तू
तुझसे ही मिला रब और मिला जिन्दगी का हर सबक

में तो चला जा रहा था अंधेरी राहों पर
बस एक रोशनी दिखी तेरे ही नूर से

डॉ. मंजू बाघमार
सहायक आचार्य
रसायन शास्त्र विभाग

दृष्टिकोण

भारत पूरी दुनिया में जाना जाता है, अपने देवस्थानों और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण, भारत भूमि को मंदिरों और तीर्थों की भूमि भी कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पूरे देश में मंदिरों का जाल बिछा हुआ है जो अपने साथ इस देश की संस्कृति, सोच एवं कला को प्रस्तुत करते हैं।

इतने सारे मंदिरों को देखकर मन में यह विचार आता है कि इस देश में पर्यटन के स्थान पर तीर्थाटन पर विशेष जोर क्यों दिया जाता है? जिसका उत्तर मिलता है हमारी भारतीय विचारधारा में जो कि यह मानती है कि हर व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होना आवश्यक है। शायद यही कारण है कि हर प्राकृतिक स्थान पर एक देवस्थान की स्थापना कर दी गई है।

जहाँ पर्यटन का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन करना है वहीं तीर्थाटन में न केवल व्यक्ति का मन प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर खुश होता है अपितु वह व्यक्ति को ध्यान और आध्यात्म से जोड़ कर उसका आन्तरिक विकास करने में सहायता करता है।

इसके अलावा तीर्थाटन पूरे देश को जोड़ने में भी मदद करता है जैसे कि हम चार धाम के संदर्भ में देख सकते हैं। भारतीय संस्कृति में चार धाम की बड़ी महत्त्वता है। ये चार धाम हैं - बद्रीनाथ (उत्तर), द्वारिका (पश्चिम), जगन्नाथ (पूर्व) और रामेश्वरम (दक्षिण)। अगर ध्यान दें तो यह भारत के चारो कोनों - पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण का मेल है। अतएव जब कोई व्यक्ति इनके दर्शन के लिए निकलता है तो वह वस्तुतः देवदर्शन से ज्यादा भारत दर्शन के लिए निकलता है।

इस प्रकार के भ्रमण से हमें हमारे देश के विभिन्न प्रान्तों की संस्कृति, खान-पान, आचार-विचार आदि जानने का मौका मिलता है और यहीं से हमारी सोच इस बात पर अडिग होती चली जाती है इतने विभिन्न होते हुए भी हम सब एक हैं एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् सारी दुनिया ही हमारा धर है।

डॉ. नेहा वाष्णीय

सहायक आचार्य
व्यवसायिक प्रशासन विभाग

सफलता के सूत्र

जीवन में सफलता व खुद को बेहतर बनाने की अभिलाषा प्रत्येक व्यक्ति की होती है किन्तु इस आकांक्षा की पूर्ति हेतु जीवन में सफलता के कुछ सूत्रों को आत्मसात करना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं -

1. आत्म मंथन / स्व-मूल्यांकन कर क्षमता को पहचाने
2. लक्ष्य निर्धारण
3. लक्ष्य प्राप्ति के लिए जूनून
4. अनुशासनबद्धता
5. सुनियोजित जीवन शैली
6. सकारात्मक सोच
7. आशावादी दृष्टिकोण
8. आत्म विश्वास
9. जागरूकता
10. बड़ी सोच
11. अथक परिश्रम
12. दृढता
13. समय की महत्ता
14. इच्छा शक्ति
15. सही निर्णय
16. त्याग व समर्पण
17. कर्मशीलता
18. लोचशीलता

अतः सफलता की चाह हेतु इन सूत्रों को अपना कर निश्चित ही हम लक्ष्य की पूर्ति कर सकते हैं एवं विषम परिस्थितियों का दृढतापूर्वक सामना कर सकते हैं।

डॉ. रचना नागर

सहायक आचार्य
व्यवसायिक प्रशासन विभाग



जीवन

अपनी किस्मत बदल के दिखा
अपने जीवन में कुछ करके दिखा
लड़ जा तू अपने-आप से
अपने आप में कुछ बदलाव करके दिखा
जीवन का यह संघर्ष है ,अपनी कमजोरी को ताकत बना

जीवन के इस पहलू में
अपने-आप को मजबूत बना
लड़ जा तू अपने-आप से
कुछ बदलाव करके दिखा

ये सोच के मत बैठ जा कि तू हार गया
ये सोच के मत हार कि तू असक्षम है
संघर्ष की पहली सी सीढ़ी तो चढ गया ,
दूसरी चढ के दिखा
लड़ जा तू अपने-आप से
कुछ बदलाव करके दिखा
संघर्ष अभी बाकी है
जीवन अभी बाकी है
तू इतिहास बना
जीवन में कुछ बन के दिखा
लड़ जा तू अपने आप से
अपने आप में कुछ बदलाव करके दिखा ।

डिंपल सांखला
बी कॉम. पार्ट-II

मानव जीवन

कभी चलता था मैं,
बेपरवाह की तरह,
अब मंजिल की ओर,
दौड़ने लगा हूँ।

कभी फिरता था मैं,
आवारों की तरह,
अब इंसानों की तरह,
सँवरने लगा हूँ।

एक समय था ऐसा,
उड़ता था मैं,
परिदों की तरह,
पर अब हर कदम ही
सोच-सोच कर रखने लगा हूँ।

पहले गिरता था मैं,
एक खिलौने की तरह,
अब गिरते -गिरते ही,
संभलने लगा हूँ।
हाँ मैं बदलने लगा हूँ।

मानव्शी बरला
बी.सी.ए. पार्ट-I

जिन्दगी

जिंदगी एक जंग है
मिल रही चुनौतियों को स्वीकार करो
कहाँ रह गई है चूक मन में यह विचार करो
तुम मैदान से भाग जाने वाले कायर हो या
एक जिद्दी खिलाड़ी

जरा एक बार खुद से ये सवाल करो
जो बीता वो समंदर के लहरों के जैसा
अब एक नई सुबह की शुरुआत करो
कहाँ रह गई है चूक ,

एक बार फिर से ये विचार करो
अपनी हर कमजोरी को ताकत मान
लक्ष्य तुम निर्धारित करो
सितारों सा चमकते, फूलों सा महकते
सूरज सा चमकते, पक्षियों सा चहकते
कामयाबी तुम हासिल करो
अपने लगन और मेहनत के बल
तुम बढ़ते चलो
अभी न पाया तो कल तुम पाओगे
मगर ये प्रयास निरंतर तुम करते रहो ।

डॉ. संगीता जैन

व्याख्याता
राजनीति विज्ञान विभाग



मेघ

जब मेघ भी बरसने के लिए लड़े ,
पर आज सूरज दादा भी है
अपनी जिद पर अड़े ,
जब कोयल अपनी मधुरवाणी सुनाती है ,
और मोरनी भी मोर का नाच देखने जाती है ,
तब सावन की पहली मेंह आती है ।

आज सूरज को भी झुकना पड़ा है ,
क्योंकि धरती और सूरज के बीच ,
मेघों का काफिला खड़ा है ।
पत्रों को भी बूंदों की प्यास है
सूखे को बादल की आस है ।
जब कानों में बूंदों की ध्वनि खो जाती है
तब सावन की पहली मेंह आती है ।

खिड़कियों पर जो दस्तक दे रही है ,
वे बारिश की बूंदें हैं ,
मृदा में जैसे पानी ,
अपनी राह ढूंढे है ।
जब मिट्टी की खुशबू ,
सांसों में धुलकर दिल में उतर जाती है,
तब सावन की पहली मेंह आती है ।।

चाँद

बिन चिमनी लालटेन सा चमक रहा था
बाहर आँगन को रोशन कर रहा था
बहुत बड़ा लालटेन ही नहीं,
पर कुछ तो था, जो चमक रहा था ॥

निर्मल सुगन्धित नजारा था
कोई द्वीप न था लालटेन न था,
यह तो कुछ शशी सा प्रतीत हो रहा था,

हीरे सा तेज था,
में उसके सौन्दर्य को निहारने में व्यस्त था
थी चारों ओर शान्ति ही शान्ति
मानो प्रकृति भी उसी के ख्यालों में मौन थी।

जब दूर हुआ भ्रम, तो पता चला
कि शशी ही तो था, जो इतना चमक रहा था ॥
मस्तिष्क तो प्रेयसी बना उसका
पर आँखों को सोना था
रात काफी हो चुकी थी,
उसके आगे सब मदहोश था
यह शीत ऋतु का चाँद ही तो था,
जिसमें इतना तेज था ॥

डर के आगे जीत है

एक बार की बात है, एक ब्रह्मचारी जी एक गाँव में गए। वह जहाँ पर ठहरे थे, वहाँ बहुत सारे बन्दर थे। इस बात का उन्हें पता नहीं था। वह छत पर चले गए और उसी समय वहाँ एक हट्टा-कट्टा बन्दर आ गया। वह बन्दर से बहुत डरते थे और वह बन्दर भी उन्हें और भी डराने लगा। उन्हें समझ नहीं आया कि ऐसी परिस्थिति में वे क्या करें। मुँह से बस यही निकला, "कि अरे बाप रे बन्दर!" और वे बेतहाशा भागे। उसी समय बन्दर भी उनके पीछे भागा। तभी संयोगवश उसी समय वहाँ मन्दिर का माली आ गया और उन्हें इस तरह भागते देखकर बोला, "भैया जी, आप भागिए मत, आप ठहर जाइए, आप यदि भागेंगे तो यह और भी ज्यादा आपके पीछे भागेगा।" माली की बात सुनकर ब्रह्मचारी जी तुरन्त ठिठक कर रुक गये। उन्होंने देखा कि अरे!, यह क्या, बन्दर भी वही ठहर गया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने माली से पूछा, भैया! तुम्हें कैसे पता कि मेरे रुकने से बन्दर भी वहीं रुक जाएगा? माली बोला, भैया जी, बन्दर की आदत होती है कि यदि हम डर के भागेंगे तो वो भी भागेगा और डराएगा। ब्रह्मचारी जी बोले, तुमने मुझे जीवन का सूत्र दे दिया। घटना बहुत छोटी सी थी पर इसमें बहुत बड़ा संदेश छिपा था।

"यदि हम जीवन में परिस्थितियों से डर कर भागेंगे तो वो हम पर और भी हावी हो जायेंगी, कौसी भी परिस्थिति हो यदि हम उसका डट कर मुकाबला करेंगे तो सब शांत हो जायेंगी। डरो मत डटे रहो।"

अभिषेक जैन
कनिष्ठ लिपिक

बुद्धि से बड़ा अनुभव

एक बार कुछ इंजीनियर एक जगह काम कर रहे थे। उन्हें एक पाईप लाइन में से एक तार निकालना था। वह पाइप लाइन एकदम जिग-जैग (टेढ़ा-मेढ़ा) था। इसलिए सारे इंजीनियर तार को इस पार से उस पार से जाने के लिए बहुत कैलकुलेशन कर रहे थे, पर कोई भी हल नहीं निकल पा रहा था। एक चरवाहा काफी देर से यह सब देख रहा था। उसने उनके पास जाकर पूछा कि क्या वह कुछ मदद कर सकता है? शायद वह तार को इस पार से उस पार ले जा सके। उसकी बात सुनकर वे सब उसका मजाक बनाने लगे और बोले कि जब हम इतने पढ़े-लिखे होकर भी इस तार को पाईप लाइन से नहीं निकाल पा रहे तो तू कैसे यह काम करेगा? वह बोला आप लोग मुझे एक मौका तो दीजिए। तब उन्होंने कहा कि अगर तू यह काम कर देगा तो तुझे 500/- रुपये देंगे। चरवाहा तैयार हो गया। उस चरवाहा ने एक चूहा पकड़ा और उसकी पूंछ में यह तार बाँध दिया।

इसके बाद में उसने चूहे को पाइप लाइन में घुसा दिया। जैसे ही चूहा इस पार से उस पार निकला, तार भी चुटकियों में पाइप लाइन से बाहर आ गया। सभी इंजीनियर हैरान रह गए और समझ गए कि अनुभव के बिना ज्ञान अधूरा होता है। सभी स्थान पर सिर्फ ज्ञान ही काम नहीं आता, कभी-कभी अनुभव से ही काम होता है। ध्यान रखिए, ज्ञान से बड़ा अनुभव होता है। ज्ञान हमें सूचना देता है और अनुभव से हम किसी भी समस्या का समाधान कर सकते हैं। इसलिए हमें जीवन में ज्ञान के साथ अनुभव को भी वरीयता देनी चाहिए।

जितेन्द्र शैनी
प्रयोगशाला सहायक
वनस्पतिशास्त्र विभाग



बट वृक्ष

उस शख्स पर क्या लिखूँ ?

जिसके लिए कम पड़ जाते हैं कलम कागज भी
खुदा नहीं वह पर खुदा से कम भी नहीं
पिता के नाम से जिसे जग जानता है।
अपनी मेहनत से मैने उन्हें हमारी तकदीर लिखते देखा है।
जॉट कर हमें अकेले में तड़पते देखा है।
कड़वे बोलकर चासनी सी मीठास जिदंगी में बोलते देखा है।
नींद में हो जब हम तो हमें प्यार से निहारते देखा है।
माँ से अकेले में हमारा हाल पूछते देखा है।
जब चोट लगे हमें तो दर्द से तड़पते देखा है।
मजबूत बनाने को हमें अपनी मोहब्बत छुपाते देखा है।
मजबूत है वह पत्थर की तरह पर
फूल से भी कोमल दिल में हमें वह रखते है।
एक-एक पैसा हमारा भविष्य के लिए जोड़ते देखा है।
हमारे अच्छे काम पर सामने मुस्कुरा कर पीठ पीछे तारीफें करते देखा है।
जरा आने में देर हो जाए तो उन्हें डरते देखा है।
दिखाते नहीं फिर भी हमें खोने का डर आँखों में छुपाते देखा है।
हाँ मैने पिता को फिक करते देखा है
सबसे आँसू छुपाकर मैने उन्हें अकेले में आँसू बहाते देखा है।
हाँ मैने पिता को बिना जताए बच्चों से अंधी मोहब्बत करते देखा है।

किरण स्वामी
बी. ए. पार्ट-III



पिता

पिता सांस है, विश्वास है,
जीवन की पूर्णता है, रोटी का दाता है,
त्योहारों का त्योहार है, पिता रक्षक है,
रिश्तों में विशेष है, अनुशासन की मूर्ति, दिखने में
"किन्तु इतना नाजुक है जिसका कोई उदाहारण नहीं है।
चरित्र निर्माण का सच्चा दोस्त है और बलिदान की पहचान
और पुरुषार्थ का चिनाब हैं

दुःख में फौलाद, कष्टों का निवारक है पिता।
पिता हिम्मत है, सिद्धान्तों का आदर्श और आशीर्वाद दाता
वह महापुरुष है, संतान के सुख के निर्माता, स्त्री के माथे का सिंदूर
परिवार का रक्षक खुशियों का खजाना और कोमल
बच्चों का बल है, मानो तो भगवान है पिता,
हर समस्या का समाधान है पिता, जीवन में
अनुभव का खजाना, साहस का दिया व तरसते नयनों सुकून,
संघर्ष का साहस है पिता
समाज में सम्मान, कुटुम्ब का
सम्पूर्ण पालन हार, मुसीबतों का सहारा है, पिता ही भगवान है

श्लोम जैन

व्याख्याता
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

माँ

सबसे प्यारी होती माँ है ,
इस जगत का संसार होती है माँ ,
माँ के बिना जिन्दगी है अधूरी ,
इस जगत का अमृत होती है माँ ,
सच तो यह है कि वो माँ ही होती है।
जो खुद भूखा रहकर दूसरों का पेट भरती है।
सारे दर्द खुद ही हर लेती, मौत से भी लड़ जाती है।
ऐसी होती है माँ ।।

माँ का होना और माँ को पुकारना ये
तो किस्मत वालों को ही नसीब है।
माँ के बिना ये संसार-संसार नहीं
लगता और घर-घर नहीं लगता।
माँ तो इस संसार का अमृत होती है।
'माँ' तो आखिर माँ होती हैं

जेनिका मैठी
बी. ए. पार्ट-II



मेरा प्रिय मित्र

दोस्ती तेरी मेरे यार,
मुझे जान से प्यारी है।
तेरा साथ रहे जीवन में,
तो लगे जैसे सारी खुशियाँ हमारी है।
मुश्किल वक़्त मे, जो हरदम साथ देता है।
सच्चा दोस्त वही है,
जो गिरते को थाम लेता है।
सच्चा दोस्त वही है।
चाहे कितने गम हो ,वो हँस के बाँट लेता है,
पतवार बन जीवन की ,
नैया को पार करा देता है।
राह दिखाकर सच्चाई की बुराईयों से
बचा लेता है,
सच्चा दोस्त वही है जो गिरते
को थाम लेता है।



जिया फातिमा
बी कॉम. पार्ट -III

सकारात्मकता

सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि आप अपने जीवन में सकारात्मक सोच रखें। किसी भी चीज को करने के लिए आप जितने सकारात्मक, रोमांचित और उत्साहित होंगे उतनी तेजी से आप का दिमाग उसे आपकी जिन्दगी में साकार करने के लिए काम करेगा। जीवन में किसी भी मुश्किल कार्य को करने की हिम्मत भी हमें हमारे सकारात्मक सोच से ही मिलती है। यदि हम सकारात्मक विचार रखेंगे तो हम हमेशा खुश रहेंगे और किसी भी कार्य को सकारात्मक विचार से करेंगे तो वह कार्य सरल एवं सहज रूप से पूरा हो सकेगा और जीवन में सफलता प्राप्त करने में कोई भी परेशानी नहीं आएगी। यह कहना गलत नहीं है कि जीवन में हमें कई परेशानी और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है परन्तु यदि हम चुनौतियों का सामना नहीं करेंगे और उससे दूर होने का प्रयास नहीं करेंगे तो जीवन में हम कभी भी सफल नहीं हो पायेंगे। सफलता एक दिन में नहीं मिलती है परन्तु यदि जीवन में कड़ी मेहनत और सकारात्मक विचार रखेंगे तो सफलता एक दिन जरूर मिलती है। अतः आवश्यक है कि भविष्य के बारे में हमेशा सकारात्मक सोचे और बोले।

मोनिका शर्मा
बी कॉम. पार्ट -III

बचपन

अब कहीं दिल बेवजह ही मुस्कराता दिखता है,
अब कहीं कोई चुटकुले से गुदगुदाता दिखता है,
अब नहीं मिलते हो यारों- यार भी जिगरी मुझे,
अब कहीं कोई मुझे यूँही बुलाता दिखता है।
अब नहीं महल है वो जो रेत में बनाए थे,
अब नहीं पतंग है जो शौक से उड़ाए थे,
अब नहीं जहाज है और ना वो नाव है,
कागजों से खेलते को जो कभी बनाए थे।
हसते है झूम लूँ शीशे में खुदको चूम लूँ,
बरसात में छतरी बना गली-गली मैं झूम लूँ,
बादलों से झाँक कर ये आसमां में छँट लूँ,
हँसी खुशी ये यार से हँसी खुशी में बाँट लूँ।

भीड़ ही में रो पडूँ भीड़ ही में गिर पडूँ,
आजाद इतना मन नहीं बेसबब ही नाच लूँ मैं,
अब बचे वो दिन नहीं।

अब कभी भी चोटियों में खिबते लगती नहीं,
अब कभी मैदान में ये शाम ये ढलती नहीं,
अब कहीं है रोशनी आँखों में किसी ख्याब कि,
अब कभी वो बावरी सी आग ही जलती नहीं।

जुस्तजु है प्यार की स्कूल की दिवार को,
मैं खड़ी हूँ इस तरफ, वो छुपा उस पार को,
नादानियाँ हो बेघडक वो तितलियाँ हजार हो,
इक झलक मिले महज उसी का इन्तजार हो।
पर चाहतो में गर्द है जिंदगी भी सर्द है,
वो दिन ये दिल में प्यार था अब दिलों में दर्द है।
बचपन बड़ा ही पाक था कुछ पल को ही वो साथ था।
कुछ रात लोरी वो सुनाकर ख्याब परीयों के दिखाकर,
गुदगुदा के यों घड़ी मुझे सुला के दो घड़ी,
सौप के गया मुझे वो वक्त के यूँ वक्त के वो हाथ में।
छोड़ के गया मुझे बैचेनियों के साथ में,
चला गया वो बचपन
चला गया वो बचपन

तान्या भारद्वाज
बी. बी. ए. पार्ट-II





SSJSPGMM in Association with INSPIRA Organized an International Conference on "Multidisciplinary Research & Innovations in Management, Commerce , Economics, Women Empowerment, Education , Pollution Control and Environmental Sustainability-2023"



Ms. Pragati Jain, B.Sc. Part-I
Presented Paper in 108th Indian Science Congress



Ms. Garima Singh and Ms. Priyanka Sain
Winners of Quiz Competition at National,
State and Regional Levels



Ms. Saniya Parveen, B.A. Part-II
Gold & Bronze Medalist in Taekwondo Championship



SSJSPGMM Hosted the
Jaipur Education Summit-2023



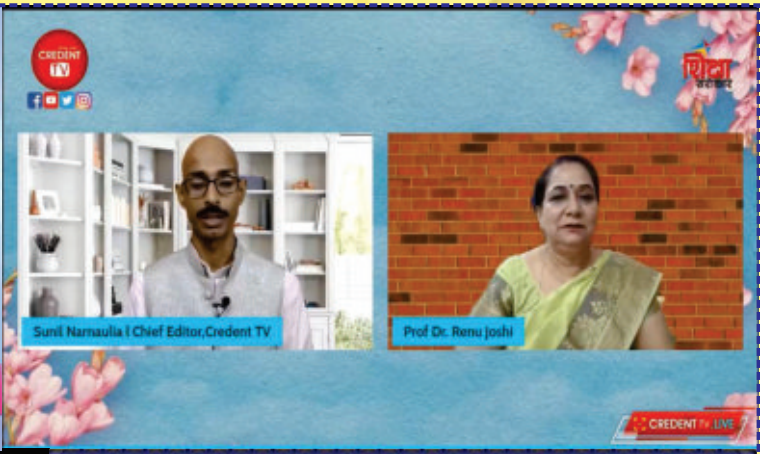
Dr. Anita Sharma
Assistant Professor, History, RRC State Level Awardee



Ms. Sangeeta Jangid
Placed at HDFC Bank



Ms. Komal Mittal, B.Sc. and Ms. Tanu Mondal, B.A., Gold Medalists, UOR

Sunil Narnaulia | Chief Editor, Credit TV
Prof. Dr. Renu Joshi




Certificate of Organizing Committee
ICORR - 2022

The certificate is presented to

Prof. Dr. Renu Joshi

India

for actively participating and successful functioning as a member of the International organizing committee in two days "International conference on Qualitative and Quantitative Research Design" organized by Eudoxia Research University - USA and Eudoxia Research Centre, India in collaboration with Maryam Abacha American University of Nigeria, Kano, Nigeria
Date of Conference: 24th and 25th September, 2022

Registration No: ERU/ICORR/2022/OC/09- 81

Professor (Dr.) Renu Joshi, Principal, SSJSPGMM

Best Indian Research Award-2023, Chairperson ICMR-2023, Organizing Committee Member of International Conference at Eudoxia Research University, USA, has credit to publish Patent, Resource Person for Live Talk Show & Shikshak Samman Awardee

हमारा महान कॉलेज

कॉलेज है , हमारा सुबोध ,
कराता है वो हमें सबके प्रति प्रेम का बोध ।
सर्वश्रेष्ठ विद्या है यहाँ ,
सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय है जहाँ ।
मैं हूँ एक कॉलेज विद्यार्थी यहाँ की
शिक्षित होकर शिक्षा फैलाना यही कर्म है ,
यहाँ के हर विद्यार्थी का यही धर्म है ।
मिला है ,मुझे मौका यहाँ ,
बनना है मुझे एक आदर्श विद्यार्थी जहाँ ।
यहाँ आई हूँ मैं जबसे ,
कहती हूँ मैं तबसे ।
हमारा कॉलेज है महान
कहेगा एक दिन सारा जहान ।

वर्षा बैरगी
बी. ए. पार्ट -II

मेरा प्यारा सुबोध

नया सवेरा: नई रोशनी, लाया मेरा प्यारा सुबोध,
पारस परसुक धातु सुहाए, ऐसा मेरा प्यारा सुबोध ।

हम मिट्टी के लोदों को, रूप अनोखा दे डाला,
अंकुराते जो मुरझाए, जीवन इसको दे डाला ।
मरुधर में ज्ञान की धारा, बनकर आया मेरा सुबोध,
नया सवेरा: नई रोशनी, लाया मेरा प्यारा सुबोध ।

अंधकार से दूर ज्योतिमय, सत्यपथ दिखलाने वाला,
कठिन राह का दिग्दर्शक, मंजिल तक पहुंचाने वाला ।
हार कभी ना मानो जीवन में, ऐसा योग सिखलाने वाला,
नया सवेरा: नई रोशनी, लाया मेरा प्यारा सुबोध ।

केवल ज्ञान का मन्दिर नहीं यह, पथप्रदर्शक व भविष्य निर्माता है,
ज्ञान और विज्ञान प्रवाहक, ज्ञान का सागर दीप है ।
बालक, युवाओं का प्रेरणास्त्रोत, ज्ञान के पथ का मार्गदर्शक,
नया सवेरा: नई रोशनी, लाया मेरा प्यारा सुबोध,

उषा शर्मा
पुस्तकालय अध्यक्ष





Scintillating Success

Our college is the ONLY Institute to be recognized for its efforts in Energy Conservation in two categories “Institutional Building” and “Energy Club”. The awards were conferred by Honorable Shri Bhanwarlal Bhati, Minister of Energy; Shri Bhaskar A. Sawant, IAS, Principal Secretary Energy and Shri Ashutosh Pednekar, IAS, CMD and Chairman RRECL.

Editorial Board

CHIEF EDITOR

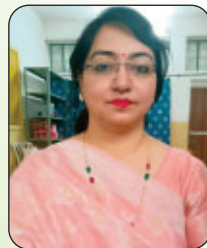


Prof. (Dr.) Renu Joshi

Editors

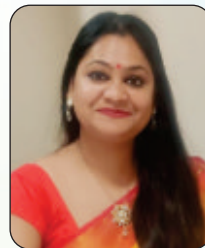


Dr. Aparna Sharma
(Hindi)

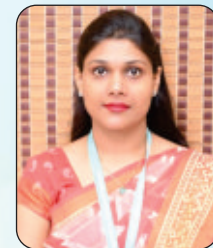


Dr. Smriti Pareek
(English)

Graphic Visualizers



Dr. Tanu Yadav



Ms Nikita Gupta

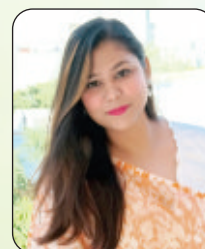
Assisting Team



Mr. Mahesh Kr. Sharma



Dr. Tekchand Sharma



Ms. Sristy Sharma

Student Support



Ms. Tamanna Yadav
B. Sc. Part-II

Institutions running under the aegis of S.S. Jain Subodh Shiksha Samiti, Jaipur

RAMBAGH CAMPUS

1. S.S. Jain Subodh P.G. Mahila Mahavidyalaya
2. S.S. Jain Subodh P.G. (Autonomous) College
3. S.S. Jain Subodh Commerce & Arts College
4. Subodh MCA Institute
5. Subodh Institute of IT
6. Subodh Public School

SANGANERI GATE CAMPUS

7. S.S. Jain Subodh Senior Secondary School
8. S.S. Jain Subodh Girls Senior Secondary School
9. Late Shri Sirahmal Bumb Smriti Udhogshala

SANGANER CAMPUS

10. S.S. Jain Subodh Girls P.G. College
11. Subodh Public School
12. S.S. Jain Subodh Women's P.G. College of Education
13. Subodh Girls Hostel
14. S.S. Jain Subodh P.G. College Women's Hostel

MANSAROVER CAMPUS

15. Subodh Law College
16. S.S. Jain Subodh Management Institute
17. S.S. Jain Subodh Boys Hostel

SITAPURA CAMPUS

18. S.S. Jain Subodh College of Global Excellence
19. Subodh Private I.T.I.



S.S. JAIN SUBODH P.G. MAHILA MAHAVIDYALAYA

- 📍 6, Bhawani Singh Road, Rambagh Circle, Jaipur-302015
- ☎ Ph.: 0141 2568096 (0)
- ✉ E-mail: info@subodhamahilacollege.com
- 🌐 www.subodhmahilacollege.com
- 📘 <https://www.facebook.com/subodhmahilacollege>
- 🌐 <https://www.linkedin.com/company/s-s-jain-subodh-p-g-mahila-mahavidyalaya-rambagh-jaipur>
- 📷 www.instagram.com/ssjsmm/
- 📺 www.youtube.com/channel/UC-0xSG5aPfiJiEil69gAwKQ
- 🐦 <https://twitter.com/ssjsmm/>